B.A. (Hons) Part III ①
Philosophy - Paper V

Topic - धर्म और नैतिकता के बीच संबंध।

Dr. Sachidanand Prasad.
Dept. of Philosophy.
R.R.S. College, Mokama.

धर्म एवं नैतिकता के बीच आवश्यक एवं अवियोज्य संबंध है क्योंकि धर्म एवं नैतिकता मानवीय व्यवहारों का नियंत्रण करते हैं। जो नीतिशास्त्र के मान्य सिद्धान्त हैं वे धर्म के भी मान्य सिद्धान्त हैं। नीतिशास्त्र में ईश्वर की सत्ता, इच्छा, स्वतंत्रता तथा आत्मा की अमरता को मान्यताओं के रूप में माना गया है और धर्म भी उपर्युक्त लिखित मान्यताओं पर ही आधारित है। धर्म का केन्द्र बिन्दु ईश्वर है। धर्म में ईश्वर को सर्वोच्च मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है। धर्म और नैतिकता के बीच संबंध को लेकर विद्वानों के दो दल हैं।

प्रथम दल के अनुसार धर्म, नैतिकता की तुलना में पुरातन है क्योंकि धर्म से ही नैतिकता का विकास

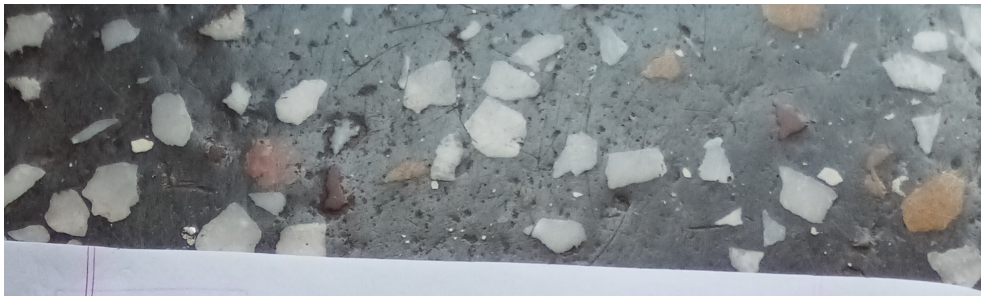

हुआ है। इन विद्वानों का कहना है कि आदिम धर्म में नैतिकता का अभाव था लेकिन क्योंकि आदिम धर्म का विकास प्राकृतिक धर्म में होता है, नैतिकता का जन्म होता है। अतः नैतिकता धर्म की देन है।

दूसरे दल के अनुसार धर्म का आविर्भाव नैतिकता से हुआ है क्योंकि नैतिकता मनुष्य को नैतिक व्यवस्थापक में विश्वास के लिए बाध्य करती है जिसके कारण ईश्वर का विचार आता है जो मनुष्य को उसके शुभ कर्म के लिए पुरस्कार और अशुभ कर्म के लिए दण्ड देता है। इसप्रकार यह विचार कि ईश्वर पापी को दण्ड देता है, धर्म का आधार बन सकता है।

इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि धर्म और नैतिकता के बीच घनिष्ठ संबंध है क्योंकि नैतिक मूल्यों के अभाव में धर्म की कल्पना नहीं की जा सकती है और नैतिकता के लिए धर्म आवश्यक है। परन्तु धर्म एवं नैतिकता के बीच कुछ असमानताएँ भी है।

(1) धर्म का केन्द्र बिन्दु ईश्वर है

परन्तु नैतिकता का केन्द्रबिन्दु मानव है।

② हमलोग मानवीय नैतिकता की कल्पना कर सकते है जिसमें अप्राकृतिक शक्तियों का संकेत नही है परन्तु धर्म का स्वरूप ही खंडित हो जाता है क्योंकि हमलोग अति प्राकृतिक सत्ता को अस्वीकार करते है।

③ धर्म, नैतिकता से वृहत शब्द है। नैतिकता का संबंध शुभ से है लेकिन धर्म का सबंध सभी प्रकार के मूल्यों को अपनाना है

④ नैतिकता अनन्त की ओर प्रगतिशील है जबकि धर्म अनंत मे ~~परिवर्तनशील~~ प्रगतिशील है।

⑤ धर्म, नैतिकता की अपेक्षा संवेगात्मक अनुभव है।

⑥ नैतिकता का आधार मानवीय स्वतंत्रता है परन्तु धर्म आत्मार्पणता के स्तर पर निवास करता है।

आधुनिक युग में धर्म और नैतिकता के बीच विरोध बतलाते हुए कुछ विचारकों का कहना है कि नैतिकता धर्म के बिना भी संभव है क्योंकि एक व्यक्ति बिना धार्मिक हुए भी चरित्रवान हो सकता है।